मदीने जब मैं जाती हूँ | By Zarnigar Kausar

मदीने जब मैं जाती हूँ , ज़माना भूल जाती हूँ
पहुँच के तैबा में फिर घर को आना भोल्ल जाती हूँ

मेरी आँखों ने जबसे देखा है मंज़र मदीने का
मैं आँखों में हंसी मंज़र समाना भूल जाती हूँ
मदीने जब मैं जाती हूँ , ज़माना भूल जाती हूँ

नबी के सदक़े जबसे पायी है ईमान की दौलत
तभी से दौलत ए दुनिया को पाना भूल जाती हूँ
मदीने जब मैं जाती हूँ , ज़माना भूल जाती हूँ

अगर फ़ाक़ा भी होता तो नबी शुक्र ए खुदा करते
ये सुनकर मैं लबों पे शिकवा भूल जाती हूँ
मदीने जब मैं जाती हूँ , ज़माना भूल जाती हूँ

मदीने जब मैं जाती हूँ , ज़माना भूल जाती हूँ
पहुँच के तैबा में फिर घर , को आना भोल्ल जाती हूँ

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%a6%e0%a5%80%e0%a4%a8%e0%a5%87-%e0%a4%9c%e0%a4%ac-%e0%a4%ae%e0%a5%88%e0%a4%82-%e0%a4%9c%e0%a4%be%e0%a4%a4%e0%a5%80-%e0%a4%b9%e0%a5%82%e0%a4%81-by-zarnigar-kausar/